श्रीगंगासागर महात्म्य

❀ श्री गणेशाय नमः ❀

॥ श्री गंगासागर माहात्म्य ॥

❀ श्री वाणी विनायकौ नमः ❀

ॐ नमस्तुभ्यं भगवते विशुद्ध ज्ञान मूर्तये ।
आत्मा रामाय रामाय, सीता, रामाय वेधसे ॥
ॐ सद्यः दुःख संहर्ती, सर्व पातक नाशिनी ।
सुखदा मोक्षदा गंगे, गंगैव च परमोगतिः ॥
ॐ जयन्ती मङ्गलाकाली, भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा शिवा क्षमा धात्री, स्वाहा स्वधानमस्तुते ॥

दोहा—अष्टम रोहित वंश में प्रगटे सगर भुवाल ।
तिनके सुत ऋषि श्राप से, भष्म भये तत्काल ॥

श्री सुखदेवजी बोले कि हे परीक्षित ! रोहित का पुत्र हरित हुआ । इस हरित से चम्पक ने जन्म लिया जिसने चम्पापुरी बसाई । चम्पक का पुत्र वसुदेव और वसुदेव का पुत्र विजय हुआ । विजय का पुत्र भरुक और उसका पुत्र वृष और वृष से बाहुक ने जन्म लिया । जब शत्रुओं ने बाहुक का राज्य

छीन लिया तब वह स्त्रियों सहित बनमें चला गया और वहां वह वृद्ध हो मृत्यु को प्राप्त हुआ, तब उसकी स्त्री सती होनेको तैयार हुई, परन्तु महर्षि और्वने उसको गर्भवती जान मरने से रोक दिया। जब रानी की सौतों ने उसको गर्भवती जानकर हिंसा के वश हो उसके गर्भ का नाश करने को अन्न में विष मिलाकर उसे खाने को दिया, परन्तु विष देने से गर्भ नष्ट नहीं हुआ। तब इस गर्भ से जो पुत्र हुआ उसका नाम सगर हुआ। यह बड़ा प्रतापी चक्र-वर्ती राजा हुआ। महाराज सगर ने और्व रिषि के बताये हुये उपाय से अश्वमेधयज्ञ करके सर्वदेव सर्व देवमय परमात्मा परमेश्वर भगवान हरि की पूजा की। जब उसने पृथ्वी भ्रमण करने को घोड़ा छोड़ा तो उसे देवराज इन्द्रने हरण करलिया। सगर राजा की दो स्त्री सुमति और केशिनी थी। राजाने यज्ञ का घोड़ा खोजने को सुमति के साठहजार पुत्रोंको

आज्ञा दी । तब वे अहंकार करके यज्ञ के घोड़े को खोजनेके लिए सारी पृथ्वी खोजने लगे । जब पृथ्वी पर घोड़ा नहीं मिला तो चारों ओर खोजने लगे । कुछ दिन पीछे सगर के पुत्र उत्तर पूर्व के कोनोंमे.

कपिल मुनि का आश्रम था, पहुंचे और वहां घोड़ेको बंधा हुआ देख, समझा कि इसने ही घोड़े को चुराया है, यही चोर है, देखो कैसी आंखें बन्द करली है, इस दुराचारी पापी को अभी मार डालो। इसप्रकार साठ हजार सहोदर भाई अस्त्र शस्त्र उठा कर महात्मा कपिलदेवजी को मारने दौड़े। भगवान कपिलदेवजी उस समय समाधि लगाये थे। कोला-हल सुनकर उनकी समाधि टूट गई और नेत्र खोल दिये । हे राजन ! इन्द्रकी माया बस सगर के पुत्रों की बुद्धि नाश को प्राप्त हुई इसलिये वे लोग महर्षि कपिलदेवजी पर ऐसा अत्याचार करने को प्रस्तुत हुये और महा कुकार्य करने के कारण, अति महान

अग्नि जोकि महर्षि कपिलदेवजी के शरीर से निकली थी उससे सबके सब क्षणमात्र में भस्म हो गये। सगर राजा के एक पुत्र का का नाम असमञ्जस था जो कि केशिनी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। उसका पुत्र अंशुमान था यह असमंजस पहिले जन्ममें योगी था, किन्तु दुष्ट संग करने के हेतु योग भ्रष्ट हुआ। यह अपनी जाति के अर्थ विपरीत कर्म करता हुआ खेलही खेलमें बालकों को सरयू के जल में डाल देता था इस प्रकार के कर्म देख इसके पिता राजा सगर ने इसको त्याग दिया था। तब इसने अपने योग के प्रभाव से मृत बालकों पुनः जिलाकर सबको दिखाया और फिर उस पुरी से निकल कर चला गया। अयोध्यावासी प्रजा असमंजस से मारे हुए, अपने अपने बालकों को सजीव देखकर महा विस्मित हुए फिर राजा ने अंशुमान के लिए बड़ा संताप किया। अब इधर की कथा

सुनिये, जब सुमति के सब पुत्र मारे गये, तब राजा सगर ने यज्ञ के घोड़े को खोजने के लिये असमंजस के पुत्र अंशुमान को भेजा तब वह उसी मार्ग से चला जो कि उनके चाचा लोगों ने खोद-कर बनाया था और फिर बहुत दूर जाकर भस्म किये हुए ढेर पर पहुंच वहां घोड़े को बंधा हुआ पाया। उस स्थान पर साक्षात् भगवान कपिल मुनि बैठे हुए थे उनको बैठा देखकर अंशुमान हाथजोड़ स्तुति करने लगा। स्तुति करने से कपिलदेवजी प्रसन्न हुए तब कपिलदेव भगवान अनुग्रह कर सगर पुत्र अंशुमान से यह वचन बोले कि हे वत्स! अपने दादा के यज्ञपशु इस घोड़े को ले जाओ! जब अश्व पाकर भी आकांक्षा के साथ खड़े रहे तब मुनिजी इनके मन का अभिप्राय जान कर बोले तुम्हारे चाचा लोग जो भस्म हो गये हैं वे गंगजल पाने के योग्य हैं और गंगाजल से ही उनकी गति

होगी। यह सुनकर अंशुमानने उनको सिरझुकाकर प्रणाम किया और उनकी परिक्रमा करके यज्ञ के घोड़े को ले राजा सगर के पास आये। राजा ने घोड़ा पाकर यज्ञ का शेष काम समाप्त किया फिर राजा सगर निस्पृह हो गये और अंशुमान के हाथ में राज्य सौंपकर बन्धनों से छूटे और मुनिके बताये योग मार्गमें जाकर उत्तम गतिको प्राप्त हुए।

❀ अथ अंशुमान कुल के भागीरथ जी का गंगाजी को लाना ❀

जिस प्रकार राजा सगर अपने पोते को राज्य भार दे तपस्या करने चलेगये। अंशुमान भी उसी तरह अपने पुत्र को राज्य दे गंगाजी को लाने की कामना से बहुत दिनों तक तपस्या करते रहे। परन्तु उनके मनकी अभिलाषा पूरी नहीं हुई। कुछ समय पीछे राजा अंशुमान मृत्यु को प्राप्त हुए। अंशुमान के दिलीप नामक पुत्र भी गंगाजी को लाने में असमर्थ होकर कालके कवर हुए।

उनके पुत्र भागीरथ ने गंगा को लाने के लिए बड़ी तपस्या की। तब गंगाजी इनको दर्शन देकर बोली कि हे वत्स ! मैं तुमपर प्रसन्न हूं वर देनेके लिये आई हूं। यह सुनकर भागीरथ ने निवेदन किया तब श्रीगंगाजी ने कहा हे राजन ! जब मैं आकाश से गिरूंगी तब किसी पुरुष को हमारा वेग अवश्य धारण करना होगा, नही तो मैं पृथ्वी को फोड़ कर पाताल को चली जाऊंगी, सो यह तो कहो कि हमारा वेग कौन धारण करेगा और मुख्य बात तो यह है कि मैं पृथ्वीपर नहीं जा सकूंगी क्योंकि मनुष्य लोग उसमें अपवित्र पदार्थ धोवेंगे सो बताओ कि उस अपवित्रताको कहाँ मैं धोऊंगी? तब भागीरथजी बोले कि, हे जननी ! संसार त्यागी ब्रह्मनिष्ठ साधु लोग अपने अपने लोक पावन अगों से आपकी अपवित्रता हर लेंगे, क्योंकि उनके हृदयों में एक अघहारी भगवान स्वयं विराजमान रहते है

इसलिये वे लोग पापके विनाश करने को समर्थ है और भगवान रुद्र जोकि सर्वशरीर धारियोंकीआत्मा है और जिस प्रकार साड़ी सूतमें पोही रहती है, वैसे ही वे शिवजी इस संसार में ओत प्रोत हो रहे हैं, वे ही आपके इस प्रबल वेग को धारण करेंगे। राजा भागीरथ गंगाजी से इस प्रकार कहकर तपस्या करके देवाधिदेव महादेव को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ करने लगे। शिवजी इनपर प्रसन्न हो गये। भागीरथजी ने जो कुछ प्रार्थना की, उसको महादेवने एवमस्तु कहा और सावधान होकर गंगा को धारण किया। हे राजन ! गङ्गाजी का महात्म्य कैसे वर्णनकरें, उनकाजल भगवान वासुदेवके चरण स्पर्श से पवित्र हुआ है। भागीरथजी भुवन पावनी गङ्गाजी को उस स्थान पर ले आये, जहां कि उनके पितृ लोगों के भस्मका ढेर पड़ा था भागीरथ गङ्गा जी के सामने पवन के रथपर सवार हो आगे आगे

चलने लगे और त्रिलोकी को पवित्र करने वाली गङ्गाजी उनके पीछे २ बहती हुई सब लोगों को पवित्र करते हुए, भस्म हुए सगरके पुत्रोंपर अपना पवित्र जल डालने लगीं। हे राजन ! सगर के पुत्र ब्राह्मण का अपराध करके भस्म हुए थे। जब कि उनके राख के ऊपर गङ्गा का जल पड़ा और वे स्वर्ग को चले गये तब उन लोगों को वैसा फल मिलेगा, जो श्रद्धा पूर्वक गङ्गाजी महरानी जगत सुखदायिनी की सेवा करतें हैं। सगरके पुत्र अपनी राख पर गंगाजी का जल पड़ने से जब पवित्र हो गये और स्वर्ग को सिधारे। अब जो पुरुष गंगा जी का ब्रत धारण करेंगे और श्रद्धा पूर्वक उनका सेवा करेंगे, उनका स्वर्ग में जाना कुछ बड़ी बात नहीं है यहां पर गङ्गा जी की महिमा जो हमने वर्णन की है यह बड़े आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि यह भगवान के चरण से उत्पन्न हुई है, और संसारका पाप नाश करने वाली हैं अर्थात् इनकी सेवा करने से संसार का आना छूट जाता है।

दोहा-केवल जल छुई होय गए सागर पुत्र उद्धार ।
नित मज्जन जो करहि नर; सो न लखे दुख द्वार ।।
हरि पदते प्रगटी किया, भवभय अघका नाश ।
जो श्रद्धा से मज्जिहैं, सो पैहैं सुख रास ।।
गंगा जी की सेवा सदा, चङ्गा रहै अवश्य ।
भूखा नङ्गा सबहि को, दे धन्न धान्य सुशस्य ।।
जो नहि महि पर आवतीं, गङ्गारानी आज ।
तो पृथ्वी पर भरि उठत, पापिन केर समाज ।।

श्री विष्णुपदी जगत जननी गंङ्गाजी सर्व जीवों की गति हैं । कैसा भी पापी क्यों न हो अन्त समय में यदि उसको गंगा लाभ हो सके तो वह पापों से मुक्त हो स्वर्गगामी होता है जो व्यक्ति गंगा २ शब्द प्रेम से उच्चारण करता है वह पापों से मुक्त हो विष्णुधाम को प्राप्त होता है । पूर्वकाल में महर्षि सन्तकुमार जी ने देवर्षि नारदजी से यह प्रश्न किया था तब नारदजी ने जो कथा भाषण किया था वह बृहद नारदीय पुराण के नाम से विख्यात है मैं आपलोगों से वह कथा कहता हू ।

एकाग्रचित होकर श्रवण करिये श्री विष्णु भगवान ने इन्द्रादि देवों को स्वर्ग राज्य में न देख तैंतिस कोटि देवताओं को दुखित चित से गिरिगुहाओं में निवास करते देख देव माता आदिति की विनय और तप से प्रसन्न हो वामन अवतार धारण किया था उन्हीं के पद पद्म से श्रीगंगाजी का जन्म हुआ अर्थात् वावनजी ने दैत्यराज बलि का गर्व चूर्ण कर देवताओं को स्वर्गाधिकार देने के लिये राजा बलि से तीन पग पृथ्वी की याचना की थी। एक पग से तलातल पातालादि सप्तलोक नाप लिये और एक पग से स्वर्गादि सप्तलोक नाप लिये। उसी समय ब्रह्मलोक में ब्रह्माजी ने श्री हरि के चरणपाद्य को धोकर कमण्डल में रख- लिया। यह पुण्यमय जल श्री गंगाजल के नाम से विख्यात हुआ है।

●●●

● श्री कपिलदेवजी की स्तुति ●

● चौपाई ●

जय जय विष्णु कपिलेश्वर, जय जय सांख्य शास्त्र के शेखर।
जय जय ब्रह्मरूप नारायण, जय सुरसन्त दुःखी हारायण ॥
जय श्री विष्णु विष्णु योगीशा, तापसरूप चराचर ईशा।
जीत काम जय ज्ञान धुरन्धर, मायातीत जितेन्द्रिय मुनिवर ॥
जय श्री देवहूति कर्दम सुत, जय जय देव साधुनिगणहित।
भव कानन दावाग्नि स्वरूपा, जय नारायण नर रूपा ॥
जय प्रभु लोक अनुग्रह कारक, सकल सिद्धि दायक भवहारक ॥
जय श्री कपिलदेव परमेश्वर हो प्रसन्न कृपालु भुवनेश्वर।
अबकरि कृपा विलोकहु स्वामी, वन्दि कमलपद कोटि नमामि ॥

दोहा—सुनि विनती सुर गणकी, भे प्रसन्न कपिलेश।
कह्यो शीघ्र दुख छूटि है, धीरज धरहु सुरेश ॥

❀ दोहा ❀

गङ्ग महातम पढ़त ही, छूंटि जात सब पाप।
श्री ब्रह्मा निज मुख कह्यो, गङ्गा महातम आप ॥

कनखल हरद्वार ब्रह्मावत, प्रयाग राज काशी बहुयायत।
मे प्रसिद्ध तीरथ जगमाही, तारत सब जग लोगन काहीं ॥
सिन्ध समीप गई महरानी, है सहस्र धारा समियानी।
साठिहु सहस्र तरे तेहिकाला, निकसि नर्क से भये निहाला ॥
श्राप मुक्त नृप पुत्रन जानी; भास्यो धर्मराज मृदु बानी।

सुनहु सकल नृप सगर कुमारा, मम अर्चना करहु स्वीकारा ॥
तुम निज दोष बहुत दुख पायो, दारुण नरक काहि तप ताओ ।
कुल सपूत भागीरथ भयऊ, तब गति हेतु कठिन तप कियऊ ॥
सोई पुण्य प्रभाव कुमारा; स्वर्ग द्वार अब खुला तुम्हारा ।
जाउ वत्स अब हरिपुर माहीं, सुखद आनन्द तहं तुम्हें सदाहीं॥
आए विष्णु दूत तेहि अवसर, सबहि बिमाम चढ़ाये सादर ।
सूर्यबंश महँ जो कोउ रहऊ, सोउ बैकुण्ठ तिनहिं सङ्ग चलेऊ ॥
धन्य धन्य सब देवन कहेऊ, भागीरथ सम कोउ न भयऊ ।
सूर्यवंश महँ जो कोई रहेऊ, सब कहँ आज सुगति तुम दयऊ ॥
यहि विधि सगर पुत्र गण जेते, सुख युत बसे स्वर्ग महँ तेते ।
यहां कपिल मुनि आश्रम याहीं, हाथ जोर भागीरथ कहहीं ॥
जय जय जय सुरसरि महरानी त्रिभुवन उधारणि जन सुखदानी ।
आज मातु मोहि अति सुख भयऊ, जो मम पित्रनगति तुमदयऊ
देवन सहित विधाता आये, भागीरथ लखि पद सिर नाये ।

❀ भजन ❀

शगर नहाइ अन्त बन जाई, मुझे सागर का रास्ता बता दो मुनी ॥
अब तो कहाँपर तेरी लगी है धुनी, अब तो कैसे दरस हम पाऊँ मुनी।
मुझे सागर का रास्ता बता दो मुनी ॥

शेर—तीर्थ बना है हिन्द में दर्शन के वास्ते ।
सब लोग आते हैं यहाँ दर्शन के वास्ते ॥
गंगा व यमुना बीच दर्श दिये मुनी ॥

अब तो माया है अपरम्पार मुनी ॥ मु०
देवनन्दन कहे कैसे आऊँ मुनी।
तेरे चरणों में शीश नवाऊँ मुनी ॥ मु० ॥

श्री गङ्गा महात्म्य सवैया

सादर गंगा को नाम लिये औ पान किये शत पातक नाशै।
ध्यान धरे अघ दुई शत जन्म के नाशत हैं यह वेद प्रकाशै ॥
पान किये विनसै अघ जन्म के अन्त समय यम त्रास विनाशै।
वद्रि सुमज्जन जन्म शहस्र के पाप कटै और हिये मुद भावैं ॥
तीरथ जेते अहै जग में अघ मंजनि गङ्गा सर्बाधिक ह्वै हैं।
देवसरी तट धर्म औ कर्म के वीस गुणा अधकी फल ह्वै हैं ॥
बाबल काशी प्रयाग सुयोग सहस्र गुणा फल प्राप्त ह्वै हैं।
अन्त समय एक बून्दहुँ जो मुखमाहिं परीं सो कृतारथ ह्वै हैं ॥
विष्णुपदी जल अन्त समय वश देह परे अधमो गति पैहैं।
आज से भागीरथी कहत्रावहि गंग प्रभाव नर से गइहैं ॥
भक्ति समेत जो सेवहि नित्य तिन्हें कछु दुर्लभ ना जग हु हैं।
जो यह गाय पड़े ओ सुने नित वद्रि सोउ सुरलोकहिं जैहैं ॥
कहे देवनन्दन सप्रेम वचन यह धन्न मनुष्य जो सागर नहैहैं।

सवैया

बहरे बहरें महि मण्डल में, अघ ओघ हर मन मोद भरे हैं।
किन्नर यक्ष मुनि सुर सिद्धहिं, सादर मज्जन पान करे हैं ॥

कोटिन पापी सुरापी महा, श्रीगङ्गा कृपा प्रति थोत तरे हैं।
बद्रि तब पद पंकज जो, वसुधा में सुधा सी सदा फहरैं हैं॥

॥ इति श्री गंगासागर महात्म्य सम्पूर्णम्॥

श्री गंगासागर संगम स्नान विधि

ॐ विष्णु ओम् तत्सत अमुक मासे,, अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुक नामहं श्री गंगासागरं संगमें स्नान फल प्राप्त्यर्थ करिष्ये।

यह संकल्प कर स्नान विधि से स्नान कर फिर हाथ जोड़कर नीचे लिखे हुए मन्त्र को पढ़ै।

त्वं देव सरितामार्थ त्वं देवी सरिता वर उभयो संग में स्नात्वा मुचामा दुरित निवं।

॥ तर्पण विधि ॥

ब्रह्मादयो सुरासर्वेऋषया सौनकादयः।
आगच्छन्तु पितरः सर्वे मम तर्पणः वेतवे—

ब्रह्मा तृप्यतां, विष्णु तृप्यतां, रुद्र तृप्यतां, इन्द्र तृप्यतां, वरुण तृप्यतां, सप्तऋषि तृप्यतां, पितरः तृप्यतां, पिता पितामह प्रपितामह तृप्यतां; माता पिता महा तृप्यतां, प्रपितामही तृप्यतां; मातामह, प्रमातामह, वृद्धः प्रमातामह तृप्यतां, मातामही प्रमातातामही तृप्यतां, इत्यादि सर्व पितर तृप्यतां।

गंगा स्नान के आगे इस मन्त्र को पढ़कर गंगाजी का स्नान करना चाहिये।

ॐ विष्णु पादाब्ज सम्भवे गंग त्रिपथगामिनी ।
धर्म द्रवति विख्याते पापमेहर जान्हवी ॥
पापोह पाप कर्माह पापात्मा पाप सम्भव ।
त्राहि मां पुण्डरीकाक्ष सर्व पाप हरोभव ॥

श्री कपिलदेव जी की स्तुति

धनि धनि कपिलदेव महाराज जगको ज्ञान सिखाने वाले ।
करके सांख्य शास्त्र उद्धार, योगमार्ग का किया प्रचार ।
प्रकृति पुरुष के भेद बताने, वाले ॥ धनि०
जब जब होत धर्म की हानी. बाढ़हि असुर अधम अभिमानी !
तब तब लेन विविध अवतार, करिके दुष्टन का संहार ।
जगत के त्रास मिटाने वाले ॥ धनि०
कपिल होइके ज्ञान प्रचारे, व्यास होइके वेद विचारे ।
नरहरि हो प्रहलाद उबारे; कूर्म होइ मंद्राचल धारे ।
होइ बराह ब्रह्मान्ड उधारे, वामन बलि द्वारे ठाड़े ।
राम होइके रावण मारे; कृष्ण होइके कंस पछाड़े ।
करिके कर्मयोग उपदेश, अर्जुन को मोह मिटाने वाले ।
धनि धनि कपिलदेव महाराज, जगको ज्ञान सिखाने वाले ।
देवनन्दन कहे पुकार चरण में शीश झुकाने वाले ॥ धनि० ॥
॥ इति ॥

मूल्य-१.५०

प्राप्तिस्थान :

परेश चन्द्र नन्दी

४ बी. जकशाह लेन कलकत्ता-१